IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

# बौद्ध एवं जैनधर्म के विचार में तुलना

डॉ. अनिल कुमार साकेत
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
शासकीय महाविद्यालय, रामपुर नैकिन, जिला, सीधी, म.प्र.

**सारांश –**

ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया जाय तो जैन धर्म बौद्ध धर्म की अपेक्षा प्राचीन है। क्योंकि तीर्थंकर महावीर एक पूर्व भी जैन परंपरा में 23 तीर्थंकर हो गये हैं। जिनमें ऋषभदेव, नेमीनाथ, पार्श्वनाथ आदि तीर्थकरों के पुष्ट प्रमाण भी होते है बौद्ध धर्म सौत्रान्तिक, वैभाषिक, माध्यमिक एवं योगाचार सम्प्रदायों में विभक्त होकर विकसित हुआ हैं जैन धर्म दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सम्प्रदायों में विभक्त होकर विकसित हुआ है किन्तु बौद्ध दर्शन की विभिन्न सम्प्रदायों में तत्वमीमांसीय मान्यताओं में प्राप्त मतभेद दृग्गोचर होता है, ऐसा कोई तत्ववीमांसीय भेद जैन दर्शन की सम्प्रदायों में दिखाई नहीं देता है जैन दर्शन के दोनों सम्प्रदाय वस्तु को द्रवपर्यायात्मक स्वीकार करते हैं तथा उसका बाह्य आस्तित्व मानते हैं जबकि बौद्ध दर्शन में विज्ञानवाद के मत में वस्तु का बाह आस्तित्व ही मान्य नहीं है। वह विज्ञान को सत्य स्वीकार करता है। सौत्रान्तिक एवं वैभाषिकमत में बाह्य वस्तु का आस्तित्व तोस्वीकृत है, किन्तु वे उसे क्षणिक मानते हैं माध्यमिकमत में वस्तु प्रतीत्यसमुत्पन्न होने से निःस्वभाव है तथा सत् असत् सदसत् एवं न सत् न असत्त इन चारो ं कोटियों से विनिर्मुक्त है।

**मुख्य शब्द :– बौद्ध, जैनधर्म , विचार, तत्वमीमांसीय, दर्शन आदि।**

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

**[1].** यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धि से धर्मः। वैशेषिक सूत्र 1.1.2.

**[2].** सुत्तनिपात, वासेट्ठसुत्त।

**[3].** उत्तराध्ययनसूत्र, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, अध्ययन 25 गा. 33

**[4].** आदिपुराण, 38. 45

**[5].** व्याख्या प्रज्ञप्ति सूत्र आगम प्रकाशन समिति, व्यवार, शतक 12 उद्देशक 2, पृष्ठ 134

**[6].** दीघनिकाय – 33 संगितिपरियासुत्त मे ं चार प्रश्नव्याकरण ?